

DPN 6359

Title : सूर्यकथा SŪRYYA KATHĀ

Run. No. 7050

Cat. No. 25

Micro. No.

Subject Religious Story

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. / HINDI

Size in cms. 18.5 x 14

Folios 12

Lines ( in a page ) 12

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor धीरवीर / डा. कमलप्रकाश मल्ल

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place DHIRJABIRA

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. : DR. KAMALA PRAKĀSHA  
MALLA

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

□ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीप्राथे सूर्ये कथा लिखिते ।

P. T. O.



Δ दसो नाम इति श्री पोस्तक सुम्ये . . . . .

. . . . सुद्धो वा असुद्धो वा . . . . .

. . . गा साह्यी ग्राम् किना . . .

८ ग्राम्ये श्री धीर्जवीर लो (खि) . . . . .

साल् माघ सुदि ९ रोज







श्रीगणेशायनमः॥ श्रीपौष्पसूर्य्यकथालिखिते॥ श्रीमत्पेरामा  
 नुजापनमः॥ चोपाईसूर्य्यदेवतासुअम्पर उतोहि॥ सुमे  
 रं उग्यान बुधिदे मोहि॥ जोसरूपआदित पारवानातेज  
 प्रतापतुअग्निसमाना॥ तुहुंआदित्यपम्येस्वश्वर स्वामि  
 अलअतिरंजनअतिरंजामी॥ वरनिनेतोतीकरलि  
 ला॥ धर्मधर धरपर्म सुसि  
 रविराजे॥ मन्मथ  
 तुरेअपवार॥ अयानवा  
 कलोवकरोवधाना॥ सापुत्र

अग्नेयमाना

महिमाआदित्यगमअपरा॥ नि  
 जिआरा॥ आदित्यक  
 ना॥ तिनितुवन  
 देवाह्येचोपाईगिरिजासु  
 मेतोहिअर्धकुहुं समराई॥ वासुदेव्येकमापु  
 रा॥ मनवचेष्टकधरेवर्तध्यान॥ शिवधर मसु  
 करेआहारा॥ दादरावर्तकरेआईवाइरनिवयेर  
 हियसंवावतवाना॥ याचपुत्रहोहिअग्निसमा  
 ना॥ वासुकथामलाईकेटेकधरेवर्तध्यान॥ निखे  
 चपुत्रहोहिअग्निजोधाअग्निसमाना॥ सूर्य्यक  
 थामेकुहुं वधानि॥ मनइस्थीकेसुनहोभवानिकु

नलार॥



१२  
कुछ वरणा हो जा के श्री गंगा स्वये कथा कर प्रसंग  
निस्व कुछ वरणा म्यो टिजाई ॥ धन्य महिमा  
ये सुर्य गुसाई ॥ देखे मासन करे आई तव  
रामन वच करे कथा अनुसार कसदासन करे  
विसराम रुखित लेई सुर्य कर नामा ॥ निस्व कुछ  
वर गोछ जाई ॥ धन्य महिमा सुर्य गुसाई ॥ दोहा कुछ  
सुने पुरान विधि अस्थिर मजित लाई ॥ निस्व सुर्य प्र  
ताप तपे कुछ वर गोछ जाई ॥ रचो ॥ जाके वरणा श्री ग  
म होई ॥ अस्थिर सोई पाचवर्तन करे आदित्य वार  
मन वचन करे नुसारा ॥ निस्व वरणा सकल म्यो टिजा  
ई ॥ धन्य महिमा हे सुर्य गोसाई ॥ दोहा ॥ जाके वरन  
श्री गम होई सो ॥ निस्व सुने पुरान ॥ धन्य प्रताप



आदित्यको महिना: करौ वधान: जो: सुर्य कथा मे कुं  
 वृजा इमन वचक म सुचि तलाई: उंड वत देहि वत करि  
 ध्याना: सोन तुलै श्री कथा समाना: जो जयता पवनि  
 नहि जाई: सुर्य कथा पधे चितलाई: ॥ दोहा ॥ तिनि भुव  
 मेरे स्वामी जोति किन प्रगास ॥ हरि कथा गुगाई हि  
 जान सुर्य कीला: वो: ध्या पुरे एक नगर को नाई रु  
 रधर विप्र राज वोहि रुई: नगर बोले मा मुकुं केला स  
 धरम कथा तां हां होई प्रगास पुजा करि सुर्य दिन रा  
 त्रि: नि सु दिने कथरहि येहि भाति ॥ कोति गुजि जा  
 रिदि सिताला: ॥ श्री सुर्य का व्यासा जो हां तहां: तला क  
 एक जादित सीवा: चारि उघाट स्व रूप जिव रं धावा  
 तां हां थव सक रूप विसाला ॥ सो जो जन रहे पताला व  
 रिधं व आदित्य आवे हि तें तां हि कहु वासा ॥ प्रात



हिं अब से लागे प्रकाश ॥ प्रहिविधी आदित सुवहित ताहि  
 ॥ ताहि सुन कथा पुत मन माहि ॥ **होहा ॥ आदित्ये कथा**  
 पुत रुप सुनहु उ मा चित लाई ॥ जो नर सुनहि चित मे  
 सुज्ये कथा गुन गाई ॥ गिरिजा सुनहु कथा मन लाई ॥  
 पुर्यदिसाये कसुर परदेसा ॥ ताहा केरा जाह पम होसा ॥ क  
 रहिसदा ॥ आदित्ये कर पुजा ॥ उनहिस मान नगर सुरजा  
 नहि दुजा ॥ प्रहिविधि नगर सकल ॥ जिआरा ॥ ता  
 हाहा रये कअगम पहाडा ॥ कोस पर चत परवाना ॥ ता  
 हांस आदित वरवना ॥ पुई परुर ताहा करहि निवास  
 ॥ प्रहिरि कैथो ॥ पछिम दिसा परम भुलासा ॥ मन वच कर्म  
 कथा गुन गाई ॥ नीरव मे तुम रहि सुनाई ॥ सुनि गिरिजा



चक्रतभैमाना ॥ तेज प्रतापसुरैमुमुकाना ॥ धनी आदि  
 तजिंरुफियेरुलिला ॥ धरमर्षरंधरपरमसुलिला ॥ सुखे  
 कथोहे अमृतवानी ॥ अस्ततिरुग्निकहिमवानी ॥ धनी  
 आदि तकाथाकिराजा ॥ जिन्द किजातिच कुंवरविराजे ॥ रो  
 हा ॥ धन्ये आदित्ये परम्यस्वर ॥ अगमन्य पराद ॥ तिनी भ  
 वमाजीतिविराजे ॥ भयासकल ॥ जिपारा ॥ चोअस्ततीक  
 ष्ठधानमनलावे ॥ कायादाने असे प्रभस्वामि अत्रराजा  
 नि ॥ सुपातपभवान ॥ दिहाइ ॥ जोनरुते प्रतमराजा ॥  
 मनवच करि अन्नमानि ॥ सुगारमनि अस्तति कर ॥ हिरोजे  
 प्रसन्नबलावांना ॥ चो ॥ जोकोगापरे अन्नारि साइ कथा  
 करे अन्न सारि ॥ नेस्वेगाष्टे सकलम्यदिजाई ॥ धन्ये  
 हिमासुर्ये जोसाई ॥ दोहा ॥ जोकेगाठ पोर अति सोई  
 थापे रे मन साई ॥ रिबेवो सुज प्रताटे गाठ सकल देजाई



॥ जो नर धरहि सुख पर ध्याना ॥ ताकर होई पुत्र पुत्र क  
 ल्याना ॥ गिरिजा क हृदि छवि जोरो ॥ येक से देह प्रव  
 र मन मारे उत्ररदि सिकरुग जो साई ॥ सो मोहिना भक  
 रुं स मगार ॥ करुन लगे सै वधार साला ॥ जो हि वि  
 धि उतर उगहि कृपा ला ॥ उत्ररदिसि सा कथा कहानी  
 मन अस्थित करि सुनहुं भवानि ॥ उत्ररदिसि येक नर चि  
 साला ॥ तांहा कारजामदन गोपाला ॥ तांहां सैल येक प  
 रम विसाला ॥ सो जो जते प्रम करला ॥ रा पिरा पि भा  
 नुकि रनि नहि धावो ॥ येहि विधि जन्म अध्याग  
 वोवो ॥ येहि नगर सकल अधि यारि ॥ उगहि मानू ज  
 ति उजियारि ॥ कल हिया सलिन रुंधि धां ॥ तव पा  
 सा पाप मरिह ॥ भई जाई ॥ जो हि विधी मानू उग  
 हि अति भाता ॥ मेता हि कथा कहो श्रवाना ॥



श्रीगुरुदेव

٢٢٦

ऐसे मयरे आचार्जे भये उँ ॥ नारद मुनि ता हावाच  
 लिये उँ ॥ दक्षि सैन गरस कल राधे धर्म कथा करन हि  
 वाव हारा ॥ फिरि फिरि नगर सकल मे देया ॥ पाप से  
 वीये अवरन हि देया ॥ ऐसे कहि नरद पे उँ जवहि ॥ न  
 गरहि प्रापदि नू मनि तवहि ॥ कुछि होहु सकल  
 नर नारि धर्मी कथा करन म विसारि ॥ कुछ वर नम  
 ये सब के प्रंगा प्रोडा प्रंगा सकल तन भंगा ॥ को उँ न  
 रहा संस उँ वाचि ॥ सब को कुछ वर न भये साची ॥ व्या  
 कल भये सकल नर नारि ॥ वाहि वाहि प्रभू कि नू पु  
 कारि ॥ ऐसे कहि आदित के पर उँ ॥ अस्तु ते क  
 था उँ ॥ तर कैल कल सुनाये ॥ का सं गये मूनी उतर  
 भूलि निल कल नर नारि सकल स कये ॥ प्रव मूनी पु



तोहि उरगसरापकवहोरीहोहिः करुनलगेनारद मृगी  
 जवहिः ॥ अंगनारद मनि कलेतवहिः ॥ अंगवर्ण मनि  
 देखाः केसा मानहुं ॥ हंसाखरेवरे जेसा ॥ भये चकतमनि  
 मैदेयि अंग ॥ निकरवर्ण सकलतनमंगा ॥ अथ काहाम  
 निपछो तोहि मै ॥ कतदिन रेवर्ण अंग मोहि ॥ कपासि  
 धुपरपदव्याधिवरणा भये तन कोटि नखे ॥ कोटि नखप  
 राधी तव प्रभु मकोहि ॥ योहि वानि दाहि निको जला  
 गिरा दुग्यानि प्रभु मकर कहा किहू न मीहि कोना ॥ उत  
 रगयेत मपरम भूजाना ॥ तांहां बाजार स्यापमनि दिस्ति ॥ अबत  
 मुले रुच्ये गम चिन्ति ॥ दोहा ॥ अथ वेमे कहं मनि जेहि कथा पुरि  
 त अंग ॥ १०० ॥ चो ॥ उग्र हस्त्राप आवन करवर्ण मेदु तुव  
 ग ॥ निकवचन नारद मन माना ॥ उतरदि सा करुकि रूपमाना



१२

॥ वीस दिने में उतर गये ॥ आप न स्याप ग्रहामुनिकाहे ॥  
 समक दृष्टि भये जवहि ॥ नारद सरपट ग्रह किये तवहि ॥  
 ॥ होर ॥ नारद उतर आई ॥ कैसे सरपट ग्रह चोकिरु ॥ ते  
 जप ताप आदित को हर खित वरगा नुलिनु ॥ ११ ॥ चो ॥  
 ऐसे कहि मुनि आदि तप ह्ये ॥ उतर दिसा कर अर्थ  
 सुये ॥ सरपट ग्रह सब किनु जो साई ॥ अस मुनि आदित  
 रुषि भये ॥ हापा उपाजे मन को अस केरु ॥ अब जव ये  
 सिभर मूल आई ॥ आसिर बाधे लें वर आई ॥ आसि वाद मु  
 निक रूप अदिने ॥ छुत वरगा अंग भल किने ॥ विदाम  
 ये मुनि वोर कर आये ॥ हर खित सो गुन गीये ॥ अल  
 तिनार सुते को करहि ॥ मन वचे क धन को धरहि ॥ न  
 मुप्रभ <sup>मि</sup> स्वार्थ न गामी ॥ जोति कला उदित भये ॥ रुप नि  
 ध्याना श्री भगवाना ॥ करु कृपा प्रभु ॥ ह्म अथ भम अप



अर्यं छविजोती विरोजे कंदलु जै तेज प्रताप तु ऊ  
 तिनि भरे धनि महि मान प्रभते रिज गोमो वने रिना  
 मले तपा न करे ॥ चोगिरि जा करुहि सा सुसन वता  
 ॥ दहि नदि सामा सुगुं रि विवि हउ गुं रि विधाता ॥ सो  
 मोहि नाथार्क हिय जाइ ॥ जोहि सो मर मसल मिटि जाइ  
 ॥ करु नल गसि वकं थार सा ॥ जोहि विधि दहि न उगुं रि  
 द्यपाला ॥ दहि नदि सा ये क नार अनुपा ॥ जो मला विप्र  
 तहां कर भूपा ॥ नेम धर मयद २० करे रि अवार ॥ तोहि  
 सो जोति वरे अजि प्रार ॥ दहि देस प्रभु को अस्सा  
 ॥ धन ॥ धन ॥ धन ॥ धन ॥ धन ॥ धन ॥ धन ॥ धन ॥ धन ॥ धन ॥  
 साय ॥ दहि न न स हि दे सु न  
 जनार्थ को वासा ॥ दहि न लो  
 धि न दि सी व सु र स रि



अनंदा ॥ **दोहा** ॥ दधि नदिसस पुनि नेहे सुनहु उमाचि  
तलाई ॥ आगिल अर्थ जस होइ हे सो मोहि नथ कह  
हु बुजा ॥ **१३** ॥ कल उविति जव ताहां जाई कह मानुष तव  
येही ॥ न्य प्रभु लेह्यो हि जन्म कलका ॥ मानुष अवतारि  
हे जस प्रकादु सरलोग दुसर वेदारा ॥ दुसर कहि वदन म  
आचार ॥ सते वचन को हि नहि भाये ही ॥ निमुदिने टेक  
सुजे पर राखहि ॥ वार कला जोती अवतारि हे ॥ नाम लेत  
भव सागर तरहि ॥ अस पर अकि महि मास मुदाई ॥ वात  
दिसा मोहि सुनाई ॥ पुलाकि ततो हि गिरिजा लभ सो जा ॥ येन  
पिच्छा दित जोहा ॥ दसो नाम इति श्री पालक सु  
॥ सुदो वात्र सुदो वन म  
॥ गां सली गाम किना गरि  
दयाम्य श्री धीर्जवीर लि  
सालमाघ सुदि २ रोज



